हृब्शी को वह जगह मालूम न थी , जहाँ मादा बनमानुस मरी पड़ी थी । उसी के पीछे पीछे लोग चले जा रहे थे । जाते जाते रास्ते में एक जगह बड़ी बदबू आाने लगी । हब्शी सहम कर ठिठक गया और कान लगा कर सुनने लगा । वहीं रोने की आवाज़ सुनायी दी । शिकारी ने अपने साथियों से कहा तुम लोग बन्दूकें तैयार रखो , मैं आगे आगे चलता हूँ । मगर अभी दो सौ कदम भी न गया था कि उसे वह बनमानुस नजर आया । मगर वह अकेला न था । उसके जोड़े की लाश भी वहीं पड़ी हुई थी । बनमानुस उस लाश पर झुका हुआ अपने दोनों हाथों से छाती पीट - पीटकर रो रहा था । उसके चेहरे से ऐसा मालूम हो रहा था , मानो वह अपने जोड़े से कह रहा था कि एक बार फिर उठो , चलो यह देश छोड़ कर उस देश में जाकर बसें जहाँ के आदमी इतने निर्दयी , इतने कठोर नहीं हैं ।